

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 01, (जून, 2025)
पृष्ठ संख्या 01-03



पर्यावरण संरक्षण और हमारी जिम्मेदारी

रंजना कुमारी, संगीता देव, वीणा शाही, सविता कुमारी
एवं सुधानंद प्रसाद लाल
सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय,
पूसा, समस्तीपुर (बिहार), भारत।

Email Id: – kumariranjanaaicrp@gmail.com

परिचय

प्रकृति हमें जीवन के लिए आवश्यक हर संसाधन प्रदान करती है लेकिन बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण और हमारी लापरवाही के कारण पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। अब समय आ गया है कि हम अपनी जिम्मेदारी को समझें और संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाएँ। व्यक्तिगत स्तर पर क्या कर सकते हैं (जैसे, कचरा न फैलाना, पौधे लगाना) पर्यावरण संरक्षण का मतलब है प्राकृतिक पर्यावरण और संसाधनों की रक्षा करना, प्रदूषण को रोकना और पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखना। यह कार्य व्यक्ति, समुदाय और सरकार द्वारा मिलकर किया जा सकता है। इसका मुख्य उद्देश्य है पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करना, पहले से हुई क्षति की भरपाई करना तथा नुकसानदायक गतिविधियों को रोककर संतुलन बहाल करना। इसमें जल, वायु, मृदा, वन और जैव विविधता की रक्षा शामिल है। इसका उद्देश्य है, पृथ्वी के संतुलन को बनाए रखना और मानव जीवन के लिए एक स्वस्थ वातावरण प्रदान करना। यह केवल प्रकृति की रक्षा नहीं है, बल्कि यह हमारे अपने अस्तित्व की सुरक्षा का भी मामला है। जब हम पर्यावरण को संरक्षित करते

हैं, तो हम वास्तव में अपनी जीवन शैली को सुधारने और अपनी भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहे होते हैं। पर्यावरण संरक्षण हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। हम सभी को अपनी आदतों में बदलाव लाने, प्रदूषण को कम करने, और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने की आवश्यकता है। इससे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और सुरक्षित पृथ्वी सुनिश्चित होगी।

पर्यावरण संरक्षण के मुख्य पहलू इस प्रकार हैं

- **प्रदूषण नियंत्रण :** वायु, जल, भूमि और प्लास्टिक जैसे प्रदूषण को घटाने के लिए प्रभावी कदम उठाना, विशेषकर औद्योगिक क्षेत्रों में।

- **जैव विविधता का संरक्षण:** वन्य जीवों और पौधों की प्रजातियों की रक्षा करना, साथ ही उनके प्राकृतिक आवासों को सुरक्षित बनाए रखना।

- **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण:** जल, मृदा और अन्य संसाधनों का सतत एवं संयमित उपयोग सुनिश्चित करना ताकि वे भविष्य में भी उपलब्ध रहें।
- **पर्यावरण के अनुकूल जीवनशैली:** व्यक्तिगत स्तर पर ऐसे कार्य करना जो पर्यावरण के हित में हों, जैसे बिजली की बचत, प्लास्टिक का सीमित उपयोग और पुनःचक्रण (रिसायक्लिंग) को अपनाना।
- **पर्यावरणीय जागरूकता फैलाना:** लोगों को पर्यावरण की महत्ता के प्रति सजग करना और उन्हें हरित व टिकाऊ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना।

पर्यावरण संरक्षण के प्रकार—

1. जल संरक्षण
2. वन्य संरक्षण
3. वन्य जीवन संरक्षण
4. विविधता संरक्षण

पर्यावरण की वर्तमान स्थिति

- वायु, जल, भूमि और ध्वनि प्रदूषण जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन
- पर्यावरण संरक्षण के उपाय पेड़ लगाना और जंगलों की रक्षा प्लास्टिक का कम उपयोग जल और ऊर्जा संरक्षण

हमारी जिम्मेदारियाँ

- व्यक्तिगत स्तर पर क्या कर सकते हैं (जैसे, कचरा न फैलाना, पौधे लगाना) पर्यावरण संरक्षण हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

- हम सभी को अपनी आदतों में बदलाव लाने, प्रदूषण को कम करने, और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने की आवश्यकता है। इससे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और सुरक्षित पृथ्वी सुनिश्चित होगी।

पर्यावरण संरक्षण के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम

- **पेड़ लगाएं और उनकी रक्षा करें:** पेड़ हमारे पर्यावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन का उत्पादन करते हैं। 
- **पानी बचाएं:** पानी एक महत्वपूर्ण संसाधन है और हमें इसका उपयोग सावधानी से करना चाहिए। 
- **कचरा कम करें:** कचरा हमारे पर्यावरण को प्रदूषित करता है। हमें कम से कम कचरा बनाना चाहिए और इसका पुनर्चक्रण करना चाहिए। 
- **प्रदूषण कम करें:** प्रदूषण हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए हानिकारक है। हमें प्रदूषण को कम करने के लिए प्रयास करने चाहिए। 
- **स्वस्थ भोजन खाएं** स्वस्थ भोजन खाना हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छा है और इससे पर्यावरण को भी कम नुकसान होता है।
- **स्वच्छता बनाए रखें** हमें अपने आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ रखने के लिए प्रयास करना चाहिए।

- पर्यावरण के बारे में जागरूकता बढ़ाएं हमें पर्यावरण के बारे में जागरूक होना चाहिए और दूसरों को भी जागरूक करना चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण का महत्व

पर्यावरण संरक्षण हमारे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह हमें स्वस्थ हवा, शुद्ध पानी और भोजन प्रदान करता है।

यह हमें प्राकृतिक आपदाओं से भी बचाता है। पर्यावरण संरक्षण से आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक स्वस्थ और सुरक्षित पृथ्वी सुनिश्चित होगी।

पर्यावरण संरक्षण में आम आदमी की भूमिका

हम सभी पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकते हैं। हम अपनी आदतों में बदलाव ला सकते हैं, प्रदूषण को कम कर सकते हैं, और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं। हम दूसरों को भी पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूक कर सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम और कायदे

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम का मतलब है, पर्यावरण को बचाने के लिए बनाए गए कानून और नियम।

इनका उद्देश्य पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली गतिविधियों को नियंत्रित करना और पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखना है। इन कानूनों और नियमों का पालन करना हमारे पर्यावरण की रक्षा के लिए आवश्यक है। ये अधिनियम हमें प्रदूषण को कम करने, वन संरक्षण, और जल संसाधनों की सुरक्षा में मदद करते हैं।

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 भारत में पर्यावरण की सुरक्षा और सुधार के लिए बनाया

गया था। इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना और स्वच्छता सुनिश्चित करना है। यह अधिनियम पर्यावरणीय नियमों और विनियमों का पालन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस अधिनियम के तहत, सरकार को पर्यावरण की सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाने का अधिकार दिया गया है।

प्रमुख प्रावधान और अनुपालन

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम को भारत की संसद ने 23 मई 1986 को पारित किया और यह 19 नवंबर 1986 को लागू हुआ। इस अधिनियम में चार अध्याय हैं। इसका मुख्य उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों को भारत में कानून के रूप में लागू करना है। इस अधिनियम के तहत कई प्रमुख प्रावधान हैं, जैसे कि प्रदूषण नियंत्रण, जल संरक्षण, और वन संरक्षण। इन प्रावधानों का अनुपालन करना जरूरी है ताकि पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सके। प्रमुख प्रावधानों में जल, वायु और मृदा प्रदूषण की निगरानी और नियंत्रण शामिल हैं। इन नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए सख्त प्रावधान और दंड निर्धारित किए गए हैं।



विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस हर साल 28 जुलाई को मनाया जाता है। यह दिन प्रकृति और उसके संसाधनों के संरक्षण के महत्व को उजागर करने के लिए मनाया जाता है। विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस का मुख्य उद्देश्य लोगों को प्रकृति के प्रति जागरूक करना और उन्हें इसके संरक्षण के लिए प्रेरित करना है। यह दिन हमें यह भी याद दिलाता है कि हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों का बुद्धिमानी से उपयोग करना चाहिए ताकि वे भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी उपलब्ध रहें।